MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

SUBJECT: - Modern World

CLASS:- M.A (HISTORY 1st SEM)

Paper - MODER world
Class - M.A-Ist sem, History

CLASSTIME Pg. No.
Date / /

प्रश्न-1 वाणिज्यवाद के उत्थान व पतन के कारणों की व्याख्या करे ?

उत्तर. सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में हुए आर्थिक अथवा व्यापारिक परिवर्तनों को वाणिज्यिक क्रान्ति का नाम दिया। वाणिज्यिक क्रान्ति के विकास के लिए जो आर्थिक नीति अपनाई गई, उसे वाणिज्यवाद कहा जाता है, इस प्रकार की नीति मोटेतौर पर 1500 से 1750 ई० के बीच अपनाई गई। वाणिज्यवाद के काल के विषय में इतिहासकार तथा विचारक एकमत नहीं है। इस नीति के अन्तर्गत यूरोप की कुछ शक्तियों ने विदेशी व्यापार पर अधिक बल दिया ताकि सोना - चाँदी प्राप्त करके अपने देश को राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाया जा सके।

वाणिज्यवाद के कारण

16 वीं शताब्दी में यूरोपीय समाज के आर्थिक जीवन, विशेषकर व्यापार के क्षेत्र में भारी परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप, वाणिज्यवाद

का उदय हुआ। वाणिज्यवाद के उदय के मुख्य कारण इस प्रकार थे —

1. राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान :— मध्यकाल में सामन्तवाद प्रचलित था। सामन्तवादी व्यवस्था में ग्राम्य जीवन पर अधिक बल दिया जाता था। अतः इस काल में यूरोपीय नगरों और व्यापार का पतन हो गया। परिणामस्वरूप, 15 वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, पुर्तगाल, स्पेन, हंगरी, नार्वे, आदि राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ। इन सभी राष्ट्रों के शासकों ने विदेशी व्यापार के द्वारा अत्यधिक मात्रा में सोना-चाँदी प्राप्त करने तथा एक-दूसरे से आर्थिक, सैनिक और राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली होने का प्रयास किया।

2. पुनर्जागरण :- पुनर्जागरण ने वाणिज्यवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 15 वीं तथा 16 वीं शताब्दी में यूरोप में पुनर्जागरण आन्दोलन चला जिसमें मनुष्य की बौद्धिक चेतना और चिन्तन शक्ति को जाग्रत करने पर बल दिया गया।

3. भौगोलिक खोजें :- सामन्तवाद के पतन के पश्चात यूरोप में पुनर्जागरण आन्दोलन चला, जिसने यूरोप के लोगों में एक नया बौद्धिक जोश उत्पन्न कर दिया। उस समय भौगोलिक खोज से यह सिद्ध हो गया कि पृथ्वी गोल है।

4. जनसंख्या में वृद्धि :- 16 वीं तथा 18 वीं शताब्दियों के बीच यूरोप की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। इससे श्रम आसानी से उपलब्ध होने लगा और मजदूरी भी सस्ती हो गई।

5. धर्मसुधार आन्दोलन :- धर्मसुधार आन्दोलन ने भी वाणिज्यवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 16 वीं शताब्दी में चर्च में फैले भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए यूरोपीय देशों में धर्म-सुधार आन्दोलन चलाया गया।

6. मुद्रा तथा बैंक प्रणाली :-
मध्यकाल में यूरोपीय देशों में वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार किया जाता था। परन्तु राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना के पश्चात यूरोपीय के शासकों ने व्यापार तथा वाणिज्य के विकास पर बल दिया।

वाणिज्यवाद का पतन

15 वीं से 18 वीं शताब्दी के बीच यूरोप में वाणिज्यवाद का उदय हुआ। वाणिज्यवाद का आरंभ इंग्लैण्ड में हुआ जब हेनरी सप्तम ने नवीन उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। और लगभग तीन शताब्दियों के पश्चात 18 वीं शताब्दी में वाणिज्यवाद का पतन आरंभ हो गया, क्योंकि जल्द ही इसकी त्रुटियां उभरकर सामने आने लगीं। अतः यूरोपीय देशों ने वाणिज्यवाद की नीति का परित्याग करना आरम्भ कर दिया। वाणिज्यवाद के पतन के मुख्य कारण इस प्रकार है-

4. संकीर्ण वाणिज्यवादी विचार धारा :- वाणिज्यवादी विचारधारा संकीर्ण तथा स्वार्थी राष्ट्रीयता की भावना पर आधारित थी, जिसमें केवल अपने ही राष्ट्र के आर्थिक हितों की रक्षा करने पर बल दिया जाता था।

3. सोना और चाँदी के संग्रह पर बल :- वाणिज्यवादी ने देश की समृद्धि के लिए अधिक से अधिक सोना एवं चाँदी के संग्रह पर बल दिया। उक्त समय पश्चात विभिन्न देशों ने सोना -> चाँदी की मुद्रा के स्थान पर कागज के नोट प्रचलित कर दिए, जिससे वाणिज्यवाद का महत्व समाप्त हो गया।

3. कृषि का पिछड़ापना :- वाणिज्यवादी ने उद्योगों एवं व्यापार के विकास पर अधिक बल दिया। अधिक सोने-चाँदी की चाह में यूरोपीय देशों की सरकारों ने कृषि पर ध्यान देना बन्द कर दिया जिससे कृषि पतन की ओर अग्रसर हो गया। जिससे वाणिज्यवाद का पतन हो गया।

4. उपनिवेशों का आर्थिक शोषण :- वाणिज्यवादियों ने देश की समृद्धि के लिए उपनिवेशों की प्राप्ति पर बल दिया। ब्रिटेन, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, हालैण्ड आदि देशों ने अफ्रीका तथा एशिया के अनेक देशों में उपनिवेश स्थापित कर लिए।

5. स्वतन्त्र व्यापारियों को हानि :- वाणिज्यवादी देशों का प्रमुख उद्देश्य समाज के कुछ वर्गों को ही लाभ पहुँचाना था।

6. श्रमिकों का शोषण :- वाणिज्यवादी देशों ने कारखानों में कार्यरत श्रमिकों का शोषण करना आरम्भ कर दिया।

7. पूँजीवाद का उदय :- 18 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी के बीच यूरोप में पूँजीवाद का उदय हुआ।

8. नये विचारों का उदय :- 18 वीं शताब्दी के अंत तथा 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप में नये विचारों का उदय हुआ जो वाणिज्यवाद के पतन का मुख्य कारण बने।

प्रश्न 2 साम्राज्यवाद का अर्थ, प्रभाव व कारण लिखो ?

उत्तर 18 वीं शताब्दी में यूरोप तथा एशिया के देशों में साम्राज्यवाद का विकास हुआ। जब कोई देश अपने साम्राज्य की सीमा से बाहर के देशों पर या द्वीपों पर राजनीतिक एवं आर्थिक शासन स्थापित करने की कोशिश करता है अथवा अधिकार स्थापित करता है तो उसे साम्राज्यवाद कहा जाता है। मध्यकाल में साम्राज्यवाद का आधार वाणिज्यवाद था।

साम्राज्यवाद के उदय के कारण

साम्राज्यवाद के उदय का मुख्य कारण आर्थिक था, लेकिन इसके उदय में राजनीति, धार्मिक एवं सामाजिक कारणों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साम्राज्यवाद के उदय के मुख्य कारण इस प्रकार थे -

आर्थिक कारण :-

1 औद्योगिक क्रान्ति :- 18 वीं तथा 19 वीं शताब्दियों के बीच यूरोप के अनेक देशों में औद्योगिक क्रान्ति आई। यूरोपीय कारखानों में नई

व आधुनिक मशीनें स्थापित की गई। उस समय सबसे ज्यादा कारखाने सूती वस्त्रों के स्थापित हुए। इन कारखानों में भारी मात्रा में वस्त्रों तथा अन्य वस्तुओं का निर्माण किया जाता था।

2. अतिरिक्त पूँजी :- औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप में अतिरिक्त पूँजी का अधिक मात्रा में संचय हुआ। फ्रांस ने मोरक्को पर इसी प्रकार अपनी बस्ती या उपनिवेश स्थापित किया। इससे साम्राज्यवाद को बल मिला।

3. कच्चे माल की पूर्ति :- इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन इत्यादि देशों में औद्योगिक क्रान्ति आई। उद्योगों में उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए कच्चे माल की बहुत आवश्यकता थी।

4. यातायात व संचार के साधनों का विकास :- 18 वीं तथा 19 वीं शताब्दी में यूरोप में यातायात तथा संचार के साधनों का बहुत विकास हुआ। समस्त यूरोप में सड़कों का जाल-सा बिछा दिया और बड़े-बड़े नगरों को इन सड़कों से जोड़ा गया।

5. जनसंख्या की वृद्धि :- 19 वीं शताब्दी में यूरोप की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। 1800 ई. में इंग्लैंड की जनसंख्या 1 करोड़ 60 लाख थी, जो 1900 ई. तक बढ़कर 5 करोड़ 10 लाख हो गई।

6. बाजारों की आवश्यकता :- यूरोपीय देशों ने व्यापारिक तथा औद्योगिक उन्नति के लिए साम्राज्यवाद की नीति पर बल दिया। आधुनिक उद्योगों में उत्पादित माल को बाजारों में बेचने की आवश्यकता थी।

सामाजिक तथा धार्मिक कारण :- साम्राज्यवाद के विकास में सामाजिक तथा आर्थिक कारणों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1 ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान :- साम्राज्यवाद के उदय में ईसाई धर्म ने मुख्य भूमिका निभाई। यूरोप की ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए पादरी विभिन्न देशों में भेजे। यदि किसी पादरी का अपमान होता तो यूरोप के देश अपमान का बदला लेने के लिए उस देश पर आक्रमण कर देते थे।

2. शिक्षा का प्रसार :— अफ्रीका तथा एशिया के अनेक देशों में साम्राज्यवाद को बढ़ावा देने में आधुनिक शिक्षा तथा अंग्रेजी भाषा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. भौगोलिक खोजें :— पुनर्जागरण काल के साथ ही यूरोप में भौगोलिक खोजों का दौर आरम्भ किया।

—: साम्राज्यवाद के परिणाम :—

19वीं शताब्दी में अफ्रीका एवं एशिया के अनेक देशों में साम्राज्यवाद का विकास हुआ। साम्राजवाद के अच्छे तथा बुरे प्रभाव इस प्रकार थे—

साम्राज्यवाद के अच्छे प्रभाव —

(i) राष्ट्रीयता की भावना का विकास :— नव-साम्राज्यवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि इससे विभिन्न देशों के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

(ii) यातायात तथा संचार के साधनों का विकास :— साम्राजवाद का सबसे अच्छा प्रभाव यह पड़ा कि इसके परिणामस्वरूप अफ्रीका तथा एशिया में यातायात तथा संचार के साधनों का विकास हुआ।

साम्राज्यवाद के बुरे प्रभाव —

(i) आपसी शत्रुता :— साम्राज्यवाद का सबसे नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि इससे यूरोपीय देशों के बीच आपसी शत्रुता उत्पन्न हो गई।

(ii) आर्थिक शोषण :— यूरोपीय देशों की साम्राज्यवादी नीति के परिणामस्वरूप, अफ्रीका तथा एशिया का आर्थिक शोषण हुआ।

(iii) जातिय भेद-भाव की नीति :— साम्राज्यवादी देशों ने जैसे-जैसे अफ्रीका तथा एशिया में अपने उपनिवेश बनाए, वैसे वैसे ही उनका औपनिवेशिक लोगों के प्रति जातिय भेद-भाव बढ़ता चला गया।

(iv) बेकारी की समस्या :— साम्राज्यवाद का एक और नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि इससे अफ्रीका तथा एशिया में गरीबी तथा बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गई।

(v) प्रथम विश्व युद्ध :— यूरोपीय देशों की औपनिवेशिक नीति प्रथम विश्व युद्ध का मुख्य कारण बनी। परिणामस्वरूप 1914 ई० का विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया, जो सम्पूर्ण विश्व के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष :— उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि एशिया तथा अफ्रीका में 19वीं 20वीं शताब्दियों के बीच साम्राज्यवादों का जोरों पर विकास हुआ

प्रश्न-3. 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के कारण व प्रभाव लिखो ?

उत्तर. 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति विश्व की एक एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस क्रान्ति ने विश्व को स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृभाव जैसे आधुनिक विचार प्रदान किए। जिसकी इतनी बड़ी शीघ्रता से देखी गई और जिसका प्रभाव धीरे-धीरे पूरी वि वीं शताब्दी तक चलता रहा।

:- फ्रांसीसी क्रांति के कारण :-

फ्रांसीसी क्रांति क्यों घटित हुई। इस विषय पर इतिहासकारों में मतभेद है। जिसके कारण निम्नलिखित है —

राजनीतिक कारण — 1589 में हेनरी चतुर्थ ने फ्रांस में बूर्बो वंश की स्थापना की। इस वंश के शासकों ने फ्रांस पर 1789 तक लगभग दो सौ वर्ष तक शासन किया।

(i) लुई चौदहवें का निरंकुश शासन :- 1643 में लुई तेरहवें की मृत्यु की पश्चात लुई चौदहवाँ अल्पवयस्क अवस्था में फ्रांस की गद्दी पर बैठा। उसके शासनकाल के प्रारम्भिक 18 वर्षों तक शासन की बागडोर कार्डिनल मजरीन के हाथों में रही।

(ii) लुई पन्द्रहवें की अयोग्यता :- 1715 में लुई चौदहवें की मृत्यु के पश्चात उसका पड़पोता लुई पन्द्रहवां फ्रांस का सम्राट बना। इस समय उसकी आयु पाँच वर्ष थी। ऐसी स्थिति में ड्यूक ऑफ ओरलियन्स 1715 से 1723 तक उसका संरक्षक रहा।

(iii) लुई सोलहवें का चरित्र :- लुई सोलहवाँ अपने दादा लुई पन्द्रहवें की मृत्यु की पश्चात फ्रांस की गद्दी पर बैठा। उसने 1774 से 1792 तक शासन किया। गद्दी पर बैठते समय वह २० वर्ष का नवयुवक था। उसके उच्च चरित्र एवं अच्छे व्यक्तित्व के कारण फ्रांस की जनता समझती थी कि वह अवश्य ही प्रशासन में सुधार करेगा।

— सामाजिक कारण — फ्रांसीसी क्रान्ति के समय फ्रांस का सामाजिक ढाँचा अति प्राचीन एवं दोषपूर्ण था।

1 सामाजिक वर्गीकरण :- 1789 की क्रान्ति से पहले फ्रांस का समाज पादरी, कुलीन और जनसाधारण वर्गों में बंटा हुआ था।

(a) पादरी : प्रथम वर्ग :- फ्रांस के प्रथम वर्ग में पादरी लोग सम्मिलित थे, जो कैथोलिक मत से सम्बन्ध रखते थे। फ्रांस में इनकी जनसंख्या 1 लाख 30 हजार थी। देश की लगभग २२% भूमि पर

इनका अधिकार था।

(b) उच्च पादरी :- फ्रांस में उच्च पादरियों की संख्या 10,000 के लगभग थी। ये आर्क बिशप, बिशप इत्यादि कहलाते थे और चर्च के उच्चो पदो पर नियुक्त थे।

(c) निम्न स्तर के पादरी :- चर्च के वास्तविक कार्यो का सम्पादन निम्न स्तर के पुरोहित करते थे। इनकी जनसंख्या 130,000 के लगभग थी।

(d) कुलीन वर्ग :- 1789 की क्रान्ति के समय फ्रांस का दूसरा वर्ग कुलीनो का था। इनकी कुल जनसंख्या चार लाख थी। ये जनसाधारण लोगो की रक्षा करते थे और युद्ध करते थे।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव

1789 की फ्रांस की क्रान्ति विश्व के इतिहास में कभी न भुलाए जाने वाली घटना थी, जिसका प्रभाव केवल फ्रांस पर ही नही बल्कि विश्व के अनेक देशो पर भी पड़ा। फ्रांसीसी क्रान्ति के फ्रांस के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन पर बहुत गहरे प्रभाव पड़े, जिनका वर्णन इस प्रकार है -

1. निरंकुश राजतन्त्र का अन्त :- 1789 से पहले फ्रांस में बूर्बो वंश के राजाओ का शासन स्थापित था। इस वंश के सभी शासक निरंकुश थे और राजस्व के दैवीय सिद्धान्त में विश्वास करते थे।

2. लिखित संविधान :- फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस के लोगो को लिखित संविधान मिला। इसके पूर्व शासन प्रणाली निश्चित सिद्धान्तो पर आधारित नही थी।

3. नागरिक अधिकारो की घोषणा :- फ्रांसीसी क्रान्ति का महत्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि फ्रांस के नागरिको को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं मौलिक अधिकार प्राप्त हुए। इससे पूर्व जनसाधारण संख्या के पास अधिकार नही थे।

4. सामन्त प्रणाली का अन्त :- क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में सामन्तवादी व्यवस्था प्रचलित थी। इस व्यवस्था मे सामन्तो एवं कुलीनो को अनेक प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। इन्ही लोगो की उच्च पदो पर नियुक्ति थी। ये किसानो से मनमानी धन एकत्रित करते थे।

5. प्रशासनिक सुधार :- 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप पुरातन एवं दोषपूर्ण शासन प्रणाली में अनेक सुधार किए गए, क्योंकि फ्रांसीसी जनता दोषपूर्ण शासन से बुरी तरह परेशान हो गई थी।

6 चर्च का पुनर्गठन :- फ्रांस की क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस में चर्च का पुनर्गठन हुआ। चर्च प्राचीन काल से फ्रांसीसी समाज की धार्मिक गतिविधियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

7. शिक्षा और साहित्य का विकास :- शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भी यह क्रान्ति बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। सरकार ने चर्च से शिक्षा सम्बन्धी अधिकार छीन लिए और इसके लिए अलग विभाग स्थापित किया।

. आर्थिक अभाव :- 1789 की क्रान्ति के समय फ्रांस की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। राज्य का खजाना बिल्कुल खाली था, जिससे सरकार का चलना तो दूर देश की मौलिक आवश्यकताएं करनी मुश्किल हो गई।

प्रश्न 4 उदारवाद से आप क्या समझते है? और इंग्लैण्ड मे इसके उत्थान के कारण लिखो?

उत्तर 19 वी शताब्दी में इंग्लैण्ड मे उदारवाद का विकास हुआ। इसके पश्चात विश्व के अनेक देशो में उदारवादी विचारों का प्रचार हुआ। उदारवाद क्या है? इस विषय पर इतिहासकारो ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए है। उदारवाद को अंग्रेजी भाषा में लिबरलिज्म कहा जाता है। जिसकी उत्पत्ति स्पेनिश भाषा के शब्द लौस - लिबरालेस से हुई है। इसका अर्थ है व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं उसका विकास। उदारवाद की एक निश्चित तथा स्पष्ट परिभाषा देना बहुत कठिन है। क्योंकि इसका विकास 18 वी शताब्दी से 19 वी शताब्दी के बीच हुआ। इसलिए इस पर अनेक इतिहासकारो का मतभेद है।

=: उदारवाद के उत्थान के कारण :-

उदारवाद के उदय की प्रक्रिया मध्यकाल मे आरम्भ हुई और 19 वी शताब्दी मे यह विकास की चरम सीमा पर पहुंच गई। उदारवाद

का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ और उसी ने सम्पूर्ण विश्व को उदारवाद का ज्ञान प्रदान किया। उदारवाद के उत्थान के मुख्य कारण इस प्रकार है -

1. गौरवपूर्ण क्रान्ति :- उदारवाद के उत्थान का मुख्य कारण इंग्लैण्ड की 1688 ई० की गौरवपूर्ण क्रान्ति थी। इस क्रान्ति के बिना किसी रक्तपात के इंग्लैण्ड की राजनीति में भारी परिवर्तन किए। इस क्रान्ति ने एक लम्बे समय से चला आ रहा संसद तथा राजा के बीच के संघर्ष को समाप्त कर दिया।

2. औद्योगिक क्रान्ति :- 18 वी तथा 19 वी शताब्दी में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति आई। वहां के उद्योगों में अनेकों तकनीकी परिवर्तन हुए। इस काल में इंग्लैण्ड में बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए जिनमें भाप, कोयले तथा तेल से चलित आधुनिक मशीनों से उत्पादन आरम्भ हुआ।

3. पुनर्जागरण :- मध्यकाल में इंग्लैण्ड की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उस समय वहां धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, सामाजिक असमानता तथा राजनीतिक अत्याचारों का बोलबाला था।

4. धर्म-सुधार आंदोलन :- मध्यकाल में इंग्लैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशों में धार्मिक संकीर्णता, रूढ़िवादिता तथा परम्पराओं पर ज्यादा जोर दिया जाता था। धार्मिक क्षेत्र में पोप की निरंकुशता का बोलबाला था। पोप तथा पादरी विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इन्होंने लोगों की ज्यादा से ज्यादा सुख देना राज्य का कर्तव्य बताया। इनके अनुसार व्यक्ति राज्य के लिए नहीं है बल्कि राज्य व्यक्ति के लिए है। अतः इस प्रकार के विचारों के प्रचार से उदारवाद के उत्थान में सहायता मिली।

5. राजनीतिक दलों का योगदान :- 18 वी तथा 19 वी शताब्दियों के बीच इंग्लैण्ड में राजनीतिक दलों का विकास हुआ। इस समय

इंग्लैण्ड में द्वि-दलीय प्रणाली का उदय हुआ। इन दलों के अलावा छोटे - छोटे अन्य दल भी थे, परन्तु इंग्लैण्ड की राजनीति में मुख्य तौर पर टोरी तथा विग दो दलों का बोलबाला था जिसके परिणामस्वरूप उदारवाद का उदय हुआ।

6 फ्रांस तथा अमेरिका की क्रान्तियाँ :- 1789 ई. फ्रांस में जनसाधारण जनता निरंकुश शासन के विरूद्ध क्रान्ति की। जिसमें जनसाधारण जनता को विजय प्राप्त हुई। क्रान्ति के पश्चात, प्रबुद्ध फ्रांस के लोगों ने राजतंत्र के स्थान पर प्रजातंत्र स्थापित करने का निश्चय किया।

7 शिक्षा का विकास :- 15 वीं एवं 16 वीं शताब्दियों के बीच इंग्लैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशों में शिक्षा का बहुत तेजी से विकास हुआ। इस दौरान ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल & अमेरिका आदि देशों में अनेकों कॉलेज तथा विश्वविद्यालय स्थापित हुए।

प्रश्न-5 इटली का एकीकरण पर नोट लिखें ?

उत्तर. 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रवाद का विकास यूरोप में बहुत जोरों पर विकास हुआ। यूरोप के इतिहास में उन्नीसवी शताब्दी में इटली का एकीकरण बहुत महत्वपूर्ण एवं रोचक घटना मानी जाती है इटली एक ऐसा देश था जिसने प्राचीन काल से ही बहुत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका निभाई थी। इसी देश में यूरोप की उच्चकोटि की सभ्यता का उदय हुआ, जिसे रोमन सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

इटली के एकीकरण की परिस्थितियाँ —
इटली के एकीकरण के कारण अथवा परिस्थितियां इस प्रकार थीं —

1. फ्रांसीसी क्रान्ति :- फ्रांसीसी क्रान्ति (1789) ने इटली पर अनेक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़े। उस समय इटली छोटे - छोटे स्वतन्त्र राज्यों में विभाजित था। जो आपस में संघर्षरत रहते थे। इसके उत्तरी प्रदेश मीलान पर ऑस्ट्रिया का प्रभुत्व स्थापित था। धीरे - धीरे इटली में लोग उदार संविधान एवं राष्ट्रीय सत्ता की मांग करने लगे।

2. **नेपोलियन के कार्य :-** नेपोलियन ने इटली पर 1796 से 1809 के बीच कई बार आक्रमण किए। उसने लगभग समस्त इटली को फ्रांसीसी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। उसके आक्रमणों के फलस्वरूप इटली में राजनीतिक एकता स्थापित हो गई।

3. **वियाना कांग्रेस :-** नेपोलियन को हराने के पश्चात विजेता देशों ने 1815 में वियाना में सम्मेलन बुलाया। वियाना कांग्रेस में इटली में निम्नलिखित व्यवस्था की गई-

(i) जेनोआ और सेवाय के प्रदेश पीडमॉण्ट को दे दिए गए।

(ii) लोम्बार्डी पर ऑस्ट्रिया का पुनः आधिपत्य स्थापित कर दिया गया।

(iii) पोप के प्रदेश पुनः पोप को सौंप दिये गये। इस प्रकार इटली के मध्य क्षेत्रों पर पोप का शासन स्थापित कर दिया गया।

4. **इटली का आर्थिक विकास :-** 19 वीं शताब्दी में इटली का बहुत आर्थिक विकास हुआ, जिसके कारण वहां के लोगों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई। इसके बाद फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन के आक्रमणों ने इटली के आर्थिक विकास को बहुत प्रभावित किया। 1815 से 1860 के बीच इटली में अनेक आर्थिक परिवर्तन हुए। पेरू से प्राप्त खाद के प्रयोग द्वारा कृषि उत्पादन को बढ़ाने पर बल दिया गया। कृषि के क्षेत्र में मशीनों का प्रयोग भी शुरू हुआ। 1848 में श्रमिकों ने आन्दोलन आरम्भ किया। जिसके फलस्वरूप इटली के एकीकरण का वातावरण उत्पन्न हो गया।

5. **पुनर्जागरण आन्दोलन :-** इटली में उदारवादियों ने स्वतंत्रता, लोकतन्त्रवादियों ने समानता तथा राष्ट्रवादियों ने भ्रातृभाव की भावना का विकास किया। इन तीनों विचारधाराओं के समन्वय से इटली में पुनर्जागरण आन्दोलन शुरू हुआ। इसी प्रकार बलबो ने डेले स्पीरान्जे ड इटली नामक पुस्तक लिखी जिसमें संघीय राज्य को इटली के एकीकरण के लिए आवश्यक बताया।

6. मैजिनी एवं इटली :— मैजिनी ने भी इटली के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैजिनी का जन्म 1805 में जेनोआ में हुआ था। उसका पिता जेनोआ में एक चिकित्सक तथा शारीरिक विज्ञान का प्रोफेसर था। मैजिनी बचपन से ही इटली का एकीकरण देखता था। 1815 की वियाना कांग्रेस के निर्णय के अनुसार जेनोआ को पीडमॉण्ट के अधीन कर दिया गया।

7. मेटरनिख एवं इटली :— वियाना कांग्रेस के निर्णय के अनुसार इटली को ऑस्ट्रिया के अधीन कर दिया गया। ऑस्ट्रिया का चांसलर मेटरनिख प्रतिक्रियावादी और रूढ़िवादी था। वह क्रान्तिकारी विचारों का शत्रु था।

8. पोप की उदारवादी नीति :— पोप ग्रेगरी 16वें की मृत्यु (1846) के पश्चात् पायस नवम् पोप बना। पायस नवम् दयालु एवं उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह एक ऐसा पोप था जो अपने चरित्र और स्वभाव से लोगों का नेतृत्व कर सका था। अब उन्होंने अपनी एकीकरण सम्बन्धी योजना को कार्यरूप देना आरम्भ कर दिया।

9. इटली के एकीकरण की योजनाएँ :— इटली का एकीकरण किस आधार पर किया जाए, इस विषय पर राष्ट्रवादियों के बीच गहरा मतभेद था। जोसफ मैजिनी और उसके अनुयायी इटली गणतन्त्रीय शासन प्रणाली स्थापित करना चाहते थे

10. 1848 की फ्रांसीसी क्रान्ति :— 1848 की फ्रांसीसी क्रान्ति का इटली पर भी गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे वहां राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हो गया। इटली के राष्ट्रवादियों का उद्देश्य उदारवादी एवं संवैधानिक प्रशासन लागू करना और अन्ततः इटली का एकीकरण करना था। मार्च 1848 में मेटरनिख ऑस्ट्रिया छोड़कर गया। मार्च 1848 तक इन तीनों राज्यों में भी संवैधानिक राजतन्त्र की स्थापना हो गई।

प्रश्न-6 जर्मनी का एकीकरण पर नोट लिखें ?

उत्तर - उन्नीसवीं शताब्दी में जर्मनी के एकीकरण की घटना यूरोप के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। फ्रांसीसी क्रान्ति (1789) से पहले जर्मनी लगभग 300 छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। इनमें से आठ राज्य ऑस्ट्रिया के पवित्र रोमन सम्राट को चुनते थे जो वे इलेक्टर कहलाते हैं। जर्मनी में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का कार्य नेपोलियन ने किया। इसने जर्मनी के छोटे-छोटे राज्यों को समाप्त करके 39 राज्यों के एक संघ में संगठित कर दिया।

जर्मनी के एकीकरण के कारण

जर्मनी के एकीकरण के लिए उत्तरदायी कारण इस प्रकार थे -

1. 1789 फ्रांसीसी क्रान्ति :- 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति के समय मध्य यूरोप पर पवित्र रोमन साम्राज्य का प्रभुत्व स्थापित था। उस समय इसमें 300 राज्यों से अधिक जर्मन राज्य शामिल थे। फ्रांसीसी क्रान्ति के समय जर्मनी के राज्यों में भी उथल-पुथल हुई। जिससे वहां के लोगों में उदारवादी सिद्धान्तों का प्रसार हुआ। समस्त जर्मनी स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व के नारों से गूंज उठा।

2. नेपोलियन के आक्रमण :- फ्रांसीसी क्रान्ति के समय नेपोलियन ने पवित्र रोमन साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। उसने छोटे-2 राज्यों को नष्ट करके अपने 39 अधीन राज्यों का एक 'राइन संघ' स्थापित कर दिया। इसमें ऑस्ट्रिया और प्रशा को छोड़कर सभी जर्मन राज्य सम्मिलित थे। एक इतिहासकार ने लिखा है नेपोलियन जर्मनी के एकीकरण का दादा था।

3. बौद्धिक आन्दोलन :- 18 वी शताब्दी के अन्त और उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जर्मनी में बौद्धिक आन्दोलन जोरों से चला, जिसे जर्मनी की विचारधारा और मननशीलता को बहुत प्रभावित किया। 18 वीं शताब्दी में प्रशा के कुछ विद्वानों ने जर्मनी में बौद्धिक जीवन से एक नयी दिशा प्रदान की

Date / /

4. मेटरनिख और जर्मनी :— वियाना कांग्रेस के सम्मेलन (1815) के समय मेटरनिख का उदय हुआ। वह जर्मनी के राज्यों के एकीकरण का घोर विरोधी था।

5. जोल्वेरिन की स्थापना :— प्रशा ने 1819 में श्वाजबर्ग-सोंदर-शोसन के एक छोटे से राज्य से सीमा शुल्क सम्बन्धी सन्धि करके जोल्वेरिन अथवा सीमा शुल्क संघ की स्थापना की।

6. फ्रांस की 1848 की क्रान्ति :— जर्मनी पर फ्रांस की 1848 की क्रान्ति का भी बहुत प्रभाव पड़ा। फरवरी 1848 में हुई फ्रांस की क्रान्ति के साथ-साथ वियाना में मेटरनिख के पतन की सूचना मिलते ही जर्मनी के विभिन्न राज्यों में विद्रोह आरम्भ हो गया। परन्तु यह सब कुछ अल्पकालीन ही साबित हुआ। फ्रेडरिक विलियम ने पुनः निरंकुश सत्ता स्थापित कर ली।

Date / /

7. फ्रेंकफर्ट की संसद :— 31 मार्च 1848 में जर्मनी को एक संघ बनाने के लिए राष्ट्रवादियों ने फ्रेंकफर्ट में एक संसद आमन्त्रित की। इस संसद में जर्मन रियासतों के 831 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसे पूर्व संसद के नाम से जाना जाता है।

8. एकीकरण की पुनः योजना एवं एरफर्ट की संसद :- फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ के फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट की ओर से जर्मनी के राजमुकुट को अस्वीकार करने के पश्चात् छोटे-छोटे राज्यों फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ के फ्रैंकफर्ट की इच्छानुसार प्रशा ने जर्मनी के एकीकरण की योजना बनाने का निश्चय किया।

9. विलियम प्रथम और उसके सैनिक सुधार :— सम्राट फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ का 1858 में अचानक मस्तिष्क विकृत हो गया। जिसके कारण तीन वर्षों तक उसका भाई विलियम राज्य के कार्य देखता रहा। 1861 में फ्रेडरिक की मृत्यु के पश्चात् 64 वर्ष की आयु में विलियम प्रशा का शासक बना। परिणाम स्वरूप संसद ने बजट पास करने से इनकार कर दिया।

प्रश्न-7 रूसी क्रान्ति के कारण व प्रभाव लिखे ?

उत्तर - 1917 की बोलशेविक क्रान्ति विश्व की महत्वपूर्ण घटनाओं मे से एक मानी जाती है। यह क्रान्ति अन्य क्रान्तियों से भिन्न थी। कुछ इतिहासकारों का मत है कि 1917 में रूस मे दो क्रान्तियां नही हुई बल्कि एक ही क्रान्ति दो चरणों मे हुई। यह क्रान्ति उस समय हुई, जब प्रथम विश्व युद्ध पूरे जोरो पर चला हुआ था। इस क्रान्ति के पश्चात विश्व के अनेक देशों मे साम्यवाद का प्रसार हुआ और कई देशों मे साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई।

-: रूसी क्रान्ति के कारण :-

1. जार की निरंकुशता :- रूस का शासक अर्थात जार अत्यन्त निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी था। वह दैवीय अधिकारों में विश्वास करता था। और उन्हीं को आधार मानकर प्रशासन चलाता था। जार अलेक्जेंडर प्रथम ने उदारवादी नीति को अपनाने के प्रयास किए परन्तु पोलैण्ड के विद्रोह एवं बाह्य प्रभावों के कारण उसने प्रतिक्रियावादी नीति अपना ली। अतः रूस के लोगों ने जार के शासन को जड़ से मिटाने का निर्णय ले लिया।

2. कृषकों की दयनीय स्थिति :- 1917 ई. में रूसी क्रान्ति के समय कृषकों की स्थिति बहुत दयनीय थी। यद्यपि जार अलेक्जेण्डर द्वितीय ने 1861 ई. में अनेक कृषक-दासो को मुक्त कर दिया था परन्तु उनकी स्थिति वैसी ही बनी रही। अतः 1917 ई. की क्रान्ति में कृषकों की दयनीय स्थिति ने मुख्य भूमिका निभाई।

3. मजदूरो में असंतोष :- 1917 ई. मे की रूसी क्रान्ति से पूर्व मजदूरों अर्थात श्रमिकों की स्थिति अच्छी नही थी। अलेक्जेण्डर तृतीय के शासन काल में रूस मे बहुत जोरों पर औद्योगिक विकास हुआ।

4. समाजवादी विचारों का प्रसार :- रूस मे समाजवादी विचारो का प्रसार 1917 ई. की क्रान्ति का मुख्य कारण बना। जारशाही शासन के विरुद्ध समाजवादी क्रान्तिकारियों ने अनेक

अनेक गुप्त संगठन का लिए।

→ रूसी क्रान्ति के प्रभाव :-

1. निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी शासन का अंत :- 1917 ई. की क्रान्ति के परिणामस्वरूप रूस में निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी शासन को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया।

2. नया संविधान :- बोल्शेविक क्रान्ति के पश्चात रूस में मजदूरो की सरकार गठित की गई देश का शासन चलाने के लिए नये संविधान की घोषणा की गई। इसके अधीन 50 सदस्य के एक प्रेजीडियम की स्थापना की गई जो मंत्रिमण्डल या काउंसिल ऑफ कॉमर्स पर नियंत्रण रखती थी।

3. प्रथम विश्व युद्ध से अलग होना :- 1917 ई. की रूस की क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि रूस ने स्वयं को विश्व युद्ध से अलग कर लिया। अतः एक शर्मनाक पराजय और संधि के पश्चात रूस विश्व युद्ध से अलग हो गया।

4. गृह-कलह :- रूस मे बोल्शेविक दल की सरकार बनते ही गृह युद्ध आरम्भ हो गया। जिन लोगो की भूमि छीनी गई वे सरकार के विरोधी हो गए। पूँजीपतियों ने भी नई सरकार का विरोध किया। अतः लाल सेना और श्वेत सेना मे जोर दार युद्ध हुआ।

5. पूँजीवादी राष्ट्रो को भय :- 1917 ई की क्रान्ति के पश्चात रूस मे समाजवादी सरकार की स्थापना हुई जिसे देखकर पूँजीपति राष्ट्र घबरा गए। अतः मित्र राष्ट्रो ने रूस में गृह युद्ध भड़काने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

6. आर्थिक सुधार :- 1917 की क्रान्ति के प्रभाव पश्चात देश की अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन किया गया। साम्यवादी ऐसी नीतियाँ लागू करना चाहते थे जिससे सभी लोगों को काम तथा रोटी प्राप्त हो सके। इसका उद्देश्य समाजवाद के द्वारा साम्यवाद तक पहुंचाना था।

प्रश्न-8. गुट निरपेक्ष आन्दोलन पर नोट लिखो ?

उत्तर. द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् सम्पूर्ण विश्व दो शक्तिशाली गुटों अर्थात् अमेरिका तथा सोवियत संघ मे विभाजित हो गया था। अतिशीघ्र ही विश्व मे सर्वोच्च शक्ति बनने के लिए इनमें शीत युद्ध आरम्भ हो गया जो सोवियत संघ के विघटन के समय तक चलरहा था।

गुट - निरपेक्षता की स्पष्ट तथा सही व्याख्या करना बड़ा मुश्किल कार्य है। यद्यपि शब्दकोष मे इसकी व्याख्या निश्चित है फिर भी विद्वानों ने इसकी अलग - अलग व्याख्या की है-

जार्ज श्वार्जन बर्गर ने गुट - निरपेक्षता, गुटों से अलग रहने की नीति है।

: गुट निरपेक्षता की विशेषताँए :-

गुट निरपेक्षता की विशेषताँए इस प्रकार है-

1. **गुटों तथा सैनिक सन्धियों का विरोध :-** गुट निरपेक्षता की सबसे मुख्य विशेषता यह थी इसमें गुटों तथा सैनिक सन्धियों का विरोध किया गया था। शीत युद्ध के समय विश्व अमेरिकी गुट तथा सोवियत संघ गुट मे विभाजित हो गया था।

2. **उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद का विरोध :-** गुट निरपेक्षता उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद मे विश्वास नहीं करता। गुट-निरपेक्ष देश सैनिक सन्धियों तथा गुटबन्दी को उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद को बढ़ावा देता था।

3. **युद्धों में अहस्तक्षेप :-** गुट- निरपेक्षता की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह युद्धों में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता। गुट-निरपेक्ष देश शीत युद्ध अथवा सशस्त्र आक्रमणों को शान्ति तथा समृद्धि का विरोधी मानते थे।

4. **आन्तरिक तथा ब्राह्य स्वतंत्रता :-** गुट निरपेक्षता आन्तरिक स्वतंत्रता मे विश्वास करता है। इसके अनुसार देश को पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना चाहिए। उनके लोगों को मौलिक अधिकार तथा कर्तव्य मिलने चाहिये। गुट निरपेक्ष देश किसी अन्य देश की परतन्त्रता में विश्वास नहीं करते थे।

Date / /

5. सैनिक शक्ति का विरोध :- गुट-निरपेक्षता सैनिक शक्ति में अविश्वास करती है। गुट-निरपेक्ष देश सैनिक शक्ति में वृद्धि राष्ट्रहित के लिए आवश्यक तो मानते थे परन्तु वे इस शक्ति को दूसरे देशों पर आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास या प्रयोग करने का विरोध करते थे।

6. शीत युद्ध को समर्थन न देना :- गुट-निरपेक्षता शीत युद्ध का विरोधी है। भारत, अफ्रीका, मिस्र आदि देशों ने शीत युद्धों में भाग नहीं लिया। वे शीत युद्ध को मानव सभ्यता एवं विश्व की शान्ति तथा समृद्धि के लिए खतरा मानते थे।

7. मित्रता में विश्वास :- गुट निरपेक्ष देश निःशस्त्र मित्रता की नीति पर चलते थे और अपने सैनिक गुटों से अलग रहते थे। वे ऐसी मित्रता के पक्षधर थे जिनके बीच किसी भी प्रकार की सैनिक सन्धियाँ न हो।

Date / /

प्रश्न-9. द्वितीय विश्व युद्ध के कारण व परिणाम लिखें?

उत्तर. द्वितीय विश्व युद्ध विश्व की सबसे दुःखद तथा कभी न भुलाई जाने वाली घटना थी। प्रथम महायुद्ध के पश्चात विश्व को आर्थिक तंगी तथा राजनीतिक उथल-पुथल का सामना करना पड़ा। इससे विश्व के अनेक देशों में आर्थिक प्रतियोगिता बढ़ गई, जिससे कुछ देश समृद्धशाली बन गए तथा कुछ साधनहीन रह गए। इस प्रकार इस युद्ध के मुख्य कारण इस प्रकार है।

1. वर्साय की संधि :- द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण 1919 ई० में सम्पन्न हुई वर्साय की संधि थी। प्रथम विश्व युद्ध में पराजित होने के कारण पश्चात जर्मनी को इस अपमानजनक सन्धि पर मजबूरन हस्ताक्षर करने पड़े। जर्मन प्रतिनिधियों तथा आम जनता ने इस संधि की शर्तों का भारी विरोध किया।

Date / /

2. राष्ट्र संघ की असफलता :- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में स्थाई शान्ति स्थापित करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढाने के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।

3. निःशस्त्रीकरण में असफलता :- मित्र राष्ट्रों ने विश्व में स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए निःशस्त्रीकरण पर बल दिया। पेरिस के शान्ति सम्मेलन में पराजित राष्ट्रों के शस्त्रास्त्रों में कमी कर दी गई।

4. तानाशाही सरकारों का गठन :- द्वितीय विश्व युद्ध का महत्वपूर्ण कारण इटली, जर्मनी तथा जापान में तानाशाही एवं सैनिक सरकारों की स्थापना थी। जर्मनी में नाजीवाद का उत्थान हुआ।

5. इंग्लैण्ड तथा फ्रांस में मतभेद :- प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के मध्य मित्र थे। प्रथम विश्व युद्ध में भी दोनों मिलकर शत्रुओं के विरुद्ध लड़े थे। परन्तु पेरिस के शान्ति सम्मेलन के पश्चात दोनों देशों के बीच मतभेद उभर गए।

Date / /

—: द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम :-

1. जन-धन की हानि :- द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि इससे जन और धन की बहुत हानि हुई। इस युद्ध में मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी, इटली तथा जापान अर्थात धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध जल तथा स्थल आक्रमणों की बजाय वायु सेना के द्वारा हवाई हमले ज्यादा किये।

2. विश्व का दो विचारधाराओं में बंटना :- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व दो विचारधाराओं में विभाजित हो गया। अब राष्ट्रीयता की भावना लगभग लुप्त हो गई तथा विश्व साम्यवादी तथा लोकतन्त्रवादी विचारधाराओं में बंट गया। ताकि सभी को लाभ मिल सके।

Date / /

3. यूरोप की सर्वोच्चता का अन्त :- द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व विश्व की राजनीति पर फ्रांस, इटली, जर्मनी आदि देशों की सर्वोच्चता स्थापित थी। ये देश जो चाहते थे वही होता था। परन्तु विश्व युद्ध ने विश्व में यूरोपीय देशों की सर्वोच्चता समाप्त कर दी।

4. राष्ट्रीयता की भावना का अन्त :- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप विश्व में राष्ट्रीयता की भावना समाप्त होने लगी। वैज्ञानिक प्रगति के कारण रक्त की शुद्धता, भाषायी एकता, धर्म नस्ल व संस्कृति के बंधन ढीले पड़ने लगे।

5. शीतयुद्ध :- द्वितीय विश्व युद्ध के समय विश्व के लोगों को शान्ति और सुव्यवस्था की आशा होने लगी परन्तु अतिशीघ्र ही उनकी आशा मिट्टी में मिल गई। परन्तु इससे विश्व के अनेक देशों में गुटबन्दी आरम्भ हो गई। 1990 ई. में शीत युद्ध समाप्त हुआ।

Date / /

प्रश्न-10. प्रथम विश्व युद्ध के कारण व परिणाम लिखो ?

उत्तर -

कारण

प्रथम विश्व युद्ध किसी एक कारण से अकस्मात ही आरम्भ नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे विभिन्न कारण और एक लम्बा इतिहास था। प्रथम विश्व युद्ध के कारण इस प्रकार है—

1. राष्ट्रीयता की भावना का विकास :- प्रथम विश्व युद्ध का सबसे प्रमुख कारण यूरोप के देशों में विकसित हो रही राष्ट्रीयता की भावना का विकास था। वियना की कांग्रेस के पश्चात राष्ट्रीयता की भावना का यह विकास और तीव्र गति से हुआ।

2. गुप्त सन्धियाँ :- यूरोप के विभिन्न देशों के बीच हुई गुप्त सन्धियाँ भी प्रथम विश्व युद्ध का मुख्य कारण बनी। फ्रांस-प्रशा युद्ध में फ्रांस की हार के पश्चात बिस्मार्क ने गुट बन्दी एवं गुप्त सन्धियों की परम्परा शुरू की

Date / /

3. सैन्यवाद का उदय :— 1870 के पश्चात् यूरोप की बड़ी शक्तियों के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ, परन्तु युद्ध की सम्भावना हमेशा बनी रही। इस दौरान सभी देशों में अपनी सेना बढ़ाने की होड़ लगी रही।

4. साम्राज्यवाद एवं आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता :—

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में आर्थिक साम्राज्यवाद का उदय हुआ। यूरोपीय देशों में औद्योगिक परिवर्तन होने से यूरोपीय कारखानों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता को पूरा करने के लिए और बने माल की बिक्री के लिए मण्डियों की आवश्यकता पड़ी

5. युद्ध का तात्कालिक कारण :— बोस्निया संकट से ऑस्ट्रिया तथा सार्बिया के बीच सम्बन्धों में अत्यधिक तनाव आ गया और 1914 ई० में यह तनाव चरम सीमा तक

Date / /

पहुँच गया।

:- प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम :-

प्रथम विश्व युद्ध 28 जुलाई 1914 ई० को आरम्भ हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य परिणाम इस प्रकार थे—

1. जनशक्ति का महाविनाश :— प्रथम विश्व युद्ध मानव जाति के लिए बहुत विनाशकारी सिद्ध हुआ। इस युद्ध में सात हजार व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से मारे गए। इस युद्ध में लगभग 80 लाख मौत के शिकार हुए।

2. आर्थिक हानि :— प्रथम विश्व युद्ध में केवल जन की ही हानि नहीं हुई, बल्कि धन सम्पत्ति की भी अपार हानि हुई। इस युद्ध में कुल 10 अरब रूपये की हानि हुई। इसके अलावा परोक्ष धन सम्पत्ति की हानि का नहीं लगाया जा सका। प्रथम महायुद्ध का दैनिक खर्च 40000 करोड़ रूपया था, जो 1918 ई० में साढ़े तीन करोड़ प्रति घण्टा हो गया। इसके अतिरिक्त, इस युद्ध में गाँव और शहर भी

बहुत संख्या में नष्ट हो गए।

3. मुद्रा प्रसार या युद्ध ऋण :- प्रथम विश्व युद्ध इतना प्रलयकारी अर्थात विनाशकारी सिद्ध हुआ कि युद्ध को चलाने के लिए दोनों पक्ष के राष्ट्रों को अपार मात्रा में ऋण लेना पड़ा। यह ऋण तो अमेरिका से लिया गया था या फिर अपने देश के पूँजीपतियों से लिया गया था।

4. व्यापार की हानि :- प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, विश्व के व्यापार को बहुत धक्का लगा। विभिन्न देशों ने अपना अधिकर धन देश के व्यापार और उद्योगों के विकास पर नहीं लगाया, बल्कि युद्ध पर खर्च किया। वस्तुतः जो अमेरिका पहले कर्ज में डूबा हुआ था, वह अब पूँजीपति बन गया। उसने विश्वयुद्ध में अनेक देशों को कर्ज दिया था।

5. श्रमिक आन्दोलन :- प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, श्रमिकों ने अपनी माँगों के लिए आन्दोलन तीव्र कर दिए। यूरोप के अधिकतर युवकों के सैनिकों के रूप में प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया, जिसके कारण श्रमिकों की कमी हो गई।

6. रूस की क्रान्ति :- प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, 1917 ई० में रूस में क्रान्ति हुई। रूस की जनता युद्ध नहीं चाहती है परन्तु जार निकोलस द्वितीय ने अगस्त 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी।

7. लोकतंत्र की स्थापना :- प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप विश्व के अनेक देशों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ, जिससे लोकतंत्र की स्थापना में बहुत सहायता मिली। युद्ध में रूस के पराजित होने से वहाँ के राष्ट्रवादियों ने जार के विरुद्ध 1917 ई० में क्रान्ति करके निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासन को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। अन्त में कहा जा सकता है कि प्रथम विश्व युद्ध दुनिया के लिए बहुत विनाशकारी सिद्ध हुआ।